महादेवी वर्मा

जन्म : महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद में हुआ था।
प्रमुख रचनाएँ : दीपशिखा, यामा (काव्य-संग्रह); संकल्पिता, श्रृंखला की कड़ियाँ, आपदा, भारतीय संस्कृति के स्वर (निबंध-संग्रह); मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी (संस्मरण / रेखाचित्र) आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।
प्रमुख पुरस्कार : सन् 1983 में इन्हें 'यामा' संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का भारत भारती पुरस्कार पद्मभूषण (1956 ई०) से सम्मानित किया गया।
निधन : इनका देहांत सन् 1987 में इलाहाबाद में हुआ।
साहित्यिक विशेषताएँ : साहित्य सेवी और समाज सेवी दोनों ही रूपों में महादेवी वर्मा की काफी प्रतिष्ठा रही है। महात्मा गाँधी द्वारा दिखाई गई राह पर अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर उन्होंने शिक्षा और समाज कल्याण के क्षेत्र में निरंतर प्रयास किया। समाज में नारी-शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने शिक्षा और समाज-कल्याण के क्षेत्र में निरंतर प्रयास किया। समाज में नारी-शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की। साहित्य जगत में महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित रही हैं। यदि कविता के क्षेत्र में वे छायावाद के चार स्तंभों में से एक मानी जाती हैं, तो अपने संस्मरणात्मक रेखाचित्र और निबंधों के कारण एक अप्रतिम गद्यकार के रूप में से ~~एक~~ के चर्चित रही हैं।

2020/8/8 15:54

Scanned with CamScanner

गद्य खंड

2020/8/8 15:54

Scanned with CamScanner

भक्तिन

Q. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

→ भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात 'लक्ष्मी' था। लक्ष्मी शब्द समृद्धि का सूचक है; लेकिन उसके जीवन में लक्ष्मी का जीवन भर वास नहीं रहा। इसीलिए वह अपना समृद्धि-सूचक नाम लक्ष्मी लोगों से छुपाती थी। भक्तिन को यह नाम लेखिका महादेवी वर्मा ने दिया, क्योंकि वह मोटी धोती और गले में कंठी-माला पहने हुए थी, साथ ही वह सिर मुड़ाए हुए वैरागी (भक्तिन) जैसी दिखाई देती थी।

Q. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

→ यह धारणा सत्य है कि समाज में जितने भी अत्याचार स्त्री पर किए जाते हैं, उन सब में स्त्री का ही हाथ होता है। स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। जब भक्तिन के गर्भ में एक कन्या के उपरांत दो कन्याएँ पैदा हुईं तब सास और जिठानियों द्वारा भक्तिन को अउपेक्षा सहनी पड़ी। आज यह का समाज पुत्र को ही वंश का संचालक मानता है। इसी कारण लड़कियों के जन्म लेने के समय शोक-सा प्रकट होता है तथा लड़कों के पैदा होने पर बधाइयाँ दी जाती हैं। इसी कारण स्त्रियों में पुत्र की चाहत बलवती हो जाती

2020/8/8 15:54

Scanned with CamScanner

भी लागू होती है। भक्तिन में सादगी, सरलता, स्वामिभक्ति आदि अनेक गुण थे लेकिन इसके साथ ही उसमें अनेक अवगुण भी थे, वह हमेशा सच्च नहीं बोलती थी। साथ-साथ वह लेखिका के इधर-उधर पड़े रुपये पैसे को अपना समझकर उठा लेती और अपने पास रख लेती। अपनी स्वामिभक्ति की पुष्टि के लिए झूठ बोलना उसे न्याय संगत लगता है। इसी कारण लेखिका ने ऐसा कहा होगा।

Q. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

→ भक्तिन हर बृहस्पतिवार को अपना सिर मुँडन करवाती है। लेखिका को स्त्रियों का सिर मुँडाना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए उसने उसे ऐसा करने से रोकना चाहा। लेकिन उसने शास्त्र का उदाहरण देते हुए कहा कि तीरथ गए मुँडाए सिद्ध अर्थात् सिद्ध लोग सिर मुँडवा कर तीर्थ करने गए। यही कारण उदाहरण लेखिका ने भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने के लिए दिया है।

Q. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

→ भक्तिन के आ जाने के बाद महादेवी को देहात की संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा का ज्ञान हो गया था। इससे पहले वह केवल शहरी जीवन से ही जुड़ी हुई थी। भक्तिन एक ऐसा सुदृढ़ चरित्र है जो महादेवी जी को अपने रंग में रंग लेती है। इसके साथ ही भक्तिन ऐसी परिस्थितियाँ भी पैदा कर देती थी कि महादेवी देहाती परंपराएँ तक निभाने को बाध्य हो जाती थीं। इस प्रकार भक्तिन के आ जाने से लेखिका अधिक देहाती हो गई।

है और यदि वह ऐसा करने में असमर्थ होती हैं तो स्त्रियों में घृणा और उपेक्षा का पात्र बन जाती हैं।

Q. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

→ भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा गया। भक्तिन की बेटी के माध्यम से महादेवी जी ने समाज में हो रहे मानवाधिकारों की पंचायत द्वारा अवहेलना है। आज हमारे पुरुष प्रधान समाज में स्त्री बेजुबान है। उसे अपनी इच्छानुसार पति चुनने की आजादी नहीं दी जाती। भक्तिन की विधवा लड़की उस लड़के से शादी करने को बाध्य हुई, जो आवारा है, उस लड़की के लिए घृणा का पात्र है। स्त्री भी मानव है उसे भी अच्छा-बुरा सोचने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए लेकिन समाज द्वारा हमेशा ~~छ~~ नारी जाति ही शोषित की जाती है। यह उन घटनाओं का प्रतीक है, जो समाज को एक दीमक की तरह खोखला कर रही हैं। यह सामाजिक परंपरा सदियों से चली आ रही है।

Q. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

→ भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा। कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं होता। व्यक्ति में कोई न कोई अवगुण कम या अधिक मात्रा में विद्यमान होते ही हैं। यह बात भक्तिन पर

2020/8/8 15:54

Scanned with CamScanner